साहित्य अकादमी की स्वर्ण-जयंती समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री जी का भाषण

1.11.2004
नई दिल्ली

जब जयपाल जी ने इस ऐतिहासिक सम्मेलन का उद्‌घाटन करने के लिए पहले मुझसे कहा तो मैंने कहा कि मैं नहीं समझता कि मैं इस सम्मान के योग्य हूं। इस समारोह का इस देश के किसी महान साहित्यिक हस्ती द्वारा उद्‌घाटन किया जाना चाहिए। लेकिन उन्होंने बार-बार आग्रह किया और मैंने अपने बचाव में सिर्फ इतना कहा– "*माना कि तेरे दीद के काबिल नहीं हूं मैं, तू मेरा शौक तो देख, तू मेरा इंतजार तो देख।*" जैसे ही मैं आपके सामने खड़ा हुआ हूं, मुझे डा0मोहम्मद इकबाल का एक शेर याद आ गया, जिसे आमतौर पर सुनाया जाता था। मेरे प्रतिष्ठित मित्र और परामर्शदाता श्री पी.एन. हक्सर भारतीय सभ्यताओं के स्थायित्व की चर्चा करते हुए इकबाल का यह शेर सुनाया करते थे– "*मिट गए यूनान, मिश्र, रोमां, लेकिन कायम है अब तक नामों निशां हमारा, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है, दौरे ज़मां हमारा।*" और मैं अक्सर हैरान होता हूं कि आखिर ऐसी क्या बात है, जिसने हमारी सभ्यता को स्थायित्व की यह महान धारणा दी है और जैसे ही मैं इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करता हूं तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचता हूं कि शताब्दियों से रचनात्मक कलाकार और महान साहित्यिक हस्तियां इस प्रेरणा के मुख्य स्रोत हैं, जिन्होंने भारतीय सभ्यता के स्थायित्व के प्रति योगदान किया है।

इसलिए, मैं उन सभी विशिष्ट हस्तियों/व्यक्तियों को नमस्कार करता हूं, जिन्होंने शताब्दियों से हमारी संस्कृति और सभ्यता को समृद्ध बनाया है। यह अकादमी उस सर्जनात्मकता का प्रतीक है। अतः, साहित्य अकादमी की स्वर्ण जयंती न केवल इस महान संस्था के इतिहास में, बल्कि हमारे देश के सांस्कृतिक इतिहास में भी मील का पत्थर है। इस महान अवसर के तीन-आयामी पहलू हैं। अकादमी की प्रशंसनीय उपलब्धियां प्रथम आयाम हैं, जिनकी जयपालजी ने विस्तार से चर्चा की है। भविष्य के लिए संकल्प दूसरा आयाम है। अकादमी के संस्थापकों के स्वप्न और आदर्श उपलब्धियां इस महान अवसर का तीसरा आयाम हैं। हमारे इस बहुभाषी देश के सांस्कृतिक जीवन में साहित्य अकादमी की भूमिका और दायित्व निस्संदेह बहुत ज्यादा हैं। भारत के साहित्यिक जीवन की विविधता को पांच दशकों से पुष्पित तथा पल्लवित करने में उल्लेखनीय सफलता के लिए मैं अकादमी को बधाई देता हूं।

साहित्य अकादमी को सौंपी गई जिम्मेदारी का आज भी उतना ही महत्व है जितना कि उस समय था जब 1947 में हम आजाद हुए थे। साहित्य के जरिए सर्जनात्मक जुड़ाव ने हमारे इस महान देश के विभिन्न हिस्सों को भावनात्मक रूप से जोड़ा है। ये भावनात्मक अनुभव हमें सुख-दुख, साहस और रोमांच, जीवन-मृत्यु, सहानुभूति तथा समानता का आभास दिलाते हैं जो मानवता की साझी विरासत हैं। रचनात्मक कलाओं के माध्यम से इन मानवीय अनुभवों के चित्रण से जहां हमारे लोगों

के बीच एकता के बंधन को अधिक मजबूती मिलती है वहीं एक साझे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भी वे एक-दूसरे के साथ होते हैं। हमारी सभी राष्ट्रीय भाषाओं में साहित्य के विकास को संरक्षण और प्रोत्साहन देकर अकादमी ने विविधता में एकता के आदर्श को बढ़ावा देने में अपना सशक्त योगदान दिया है। 50 वर्षों से जिस जोश और उत्साह के साथ अकादमी इस महान सपने को पूरा करने में लगी हुई है, उसके के लिए मैं इसको नमन करता हूं।

अकादमी अपने जीवन-यात्रा के छठे दशक में प्रवेश कर रही है और इस मौके पर हम उन सभी प्रमुख लेखकों और विद्वानों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अध्यक्ष और सदस्यों के रूप में इस महान संस्था का अच्छे और बुरे समय में मार्ग प्रशस्त किया है। यह उन्हीं के प्रयासों का फल है जिसे आज हम समारोहपूर्वक मना रहे हैं।

हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने इन पथ-प्रदर्शकों के प्रयासों को आगे बढ़ाएं ताकि भावी पीढ़ियां एक ऐसी संस्था से लाभान्वित होती रहें जो सभी भारतवासियों को वह स्वर प्रदान करती है जिसके सहारे हम एक-दूसरे के सपनों और भावनाओं को समझ सकते हैं और उन्हें पूरा कर सकते हैं। साहित्य अपने आप में एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सपनों और कल्पनाओं का निरंतर जन्म होता रहता है। जो लेखक अपनी पीढ़ी की मनोव्यथा, भय, चिंता और अपेक्षाओं को अभिव्यक्ति देता है, वह एक व्यक्ति होने के साथ ही साथ एक प्रतीक भी होता है। यह लेखक की प्रामाणिकता का स्रोत होने के साथ ही साथ उसकी स्वीकार्यता और समाज की प्रासंगिकता का आधार भी होता है। इस देश में हर भाषा में लिखे गए साहित्य में लोगों के अपने स्वर में उनके संघर्ष की छाप होती है। अनुवाद से उनके इन भावों को ग्रहण कर उन्हें अभिव्यक्ति दी जा सकती है। सर्जनात्मक दृष्टि से हरेक भाषा का एक जैसा महत्व है, क्योंकि प्रत्येक भाषा में इतिहास की ये अद्वितीय छाप मौजूद होती है। इसलिए, भाषाई और क्षेत्रीय पहचानों में इसप्रकार की स्पष्ट विविधताओं को देखते हुए कोई यह प्रश्न पूछ सकता है कि, "आखिर राष्ट्रीय साहित्य अकादमी की प्रासंगिकता क्या है?"

मेरे दृष्टिकोण से साहित्य अकादमी की दोहरी जिम्मेदारी है। एक ओर उसे इन विशिष्ट पहचानों को विकसित करना है जो हमारे देश की धरोहर को समृद्ध करते हैं। दूसरी ओर उसे यह सुनिश्चित करना है कि हमारे भाषाई समूह की रचनाओं में जो सर्वोत्तम है वह अन्य भाषाई समूहों को उपलब्ध हो सके। कला का स्थान भाषाई अवरोधों से ऊपर होना चाहिए। विविध अनुभवों और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के आदान-प्रदान से हम एक-दूसरे को गहराई से समझ सकते हैं और एक-दूसरे के बीच विचारों का बेहतर आदान-प्रदान हो सकता है। भारतीय साहित्य आज हमारे अनुभव की बहुआयामी यथार्थता का प्रतीक है। इस प्रकार साहित्य अकादमी इस भारतीय यथार्थता के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वस्तुतः प्राचीन समय से अर्थात आधुनिक संचार सुविधाओं के उपलब्ध होने से काफी पहले से देशभर में साहित्यिक आंदोलन चलाए जाते रहे हैं। उदाहरण के लिए, *रामायण* और *महाभारत* ने बिना किसी संगठित प्रयास के लगभग सभी भारतीय भाषाओं

में अपना प्रभाव छोड़ा है। इसी तरह *पंचतत्र* और *कथाचरितसागर* के पुरातन ज्ञान ने सम्पूर्ण भारत को प्रभावित किया है। बौद्ध और जैन साहित्य का भी व्यापक प्रभाव है। अकादमी की स्थापना करने से हमें साहित्यिक परंपराओं को एक-दूसरे के निकट लाने के अनेक अवसर पैदा हुए हैं। इसके फलस्वरूप, अनेक प्रकार के साहित्य, जैसे हमारे आजादी के संघर्ष का साहित्य, उत्तरोत्तर साहित्य, आधुनिकतावादी साहित्य, नारीवाद साहित्य और दलित साहित्य को सारे भारत में सराहा गया और समर्थन मिला। इससे हमारे लोगों को भाषाई सीमाओं से ऊपर उठकर सामूहिक रूप से अपनी रचनात्मक ऊर्जा को संकेन्द्रित करने में मदद मिली है।

इसलिए, भाषाओं को समृद्ध करते समय ये लेख क्षेत्रों की सीमाओं से बंधे नहीं रहते बल्कि उनमें आम व्यक्ति की चिंताओं और हितों को अभिव्यक्ति मिलती है। इस प्रकार साहित्य ने हमारी अनेकता में एकता के नए आयामों की खोज का मार्ग प्रशस्त किया है। खोज के इस कार्य में साहित्य अकादमी ने एक प्रभावी माध्यम की भूमिका निभाई है।

किसी भी राष्ट्र के इतिहास में ऐसा समय आता है जब उसे आशाओं और निराशाओं का सामना करना पड़ता है। जब आम नागरिक सामयिक मनोवृत्ति से प्रभावित होने लगते हैं तब अति संवेदनशील, गहन सोच और उचित दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति ही हमें आसन्न खतरों से आगाह करके हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। बगैर इस रचनात्मक दृष्टिकोण के, जोकि लेखकों को वरदान में मिला होता है, हम वर्तमान के संकीर्ण दायरे में फंस जाएंगे। तब हमारे पास न तो विगत का कोई आधार होगा और न भविष्य की कोई खबर। इस राह में लेखक हमारे लोगों को उनकी सोच और दृष्टिकोण के प्रति जागरूक बनाते हैं और मौन लोगों की आवाज को सुनने तथा हमारे समाज के अलग-थलग पड़े वर्गों के चेहरों की पहचान करने में हमारी सहायता करते हैं। इसलिए, हमारे साहित्य के लिए एक राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराकर, साहित्य अकादमी ने हमारे लोकतंत्र को काफी समृद्ध किया है। यह एक ऐसी जिम्मेदारी है जिसे वहन करने के लिए निरंतर जागरूकता की आवश्यकता होती है।

मैं भारतीय साहित्य को विकसित करने और इस प्रकार बहुलतावादी परम्पराओं के साथ अधिक जागरूकता और मानवोचित समाज के निर्माण की जिम्मेदारी आपको सौंपता हूं। मेरा आपसे आग्रह है कि आप हमारे लोगों और हमारे लोकतंत्र की सेवा में समर्पित 50 वर्षों की इस सफल यात्रा को इसी प्रकार आगे बढ़ाते रहें। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आगे की यात्रा समान रूप से चुनौतीपूर्ण और लाभप्रद होगी। महान राष्ट्रीय महत्व के इस संवेदनशील कार्य में मैं अकादमी की हर प्रकार की सफलता की कामना करता हूं।